INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

IRJMSH

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

भारतीय वास्तुकला के इतिहास के परिपक्क विकास का स्वर्णयुग

लेखक. प्रा. किशोर नागनाथराव पोतदार,

भारती विद्यापीठ कॉलेज ऑफ फाईन आर्ट. पुणे.

Email id: kishor.potdar@ bharatividyapeeth.edu mo.no. 9921855412

सहयोगी लेखक. प्रा. संतोषराव अरुण खवळे.,

भारती विद्यापीठ, भारती कला महाविद्यालय. पुणे.

Email id: Santosh.khawale @ bharatividyapeeth.edu mo.no. 9503426191

प्रस्तावना

भारतीय वास्तुकला के इतिहास में मध्यकालीन काल (ई. 8वीं से 13वीं शताब्दी) को इंडो-आर्यन या नागर शैली की मंदिर वास्तुकला के परिपक्क विकास का स्वर्णयुग माना जाता है। इस काल में धार्मिक पुनर्जागरण, प्रादेशिक कलाशैलियों का उत्कर्ष तथा शिल्पकला में अत्यंत सूक्ष्म और जटिल प्रयोग देखने को मिलते हैं। मंदिर केवल पूजा के स्थल नहीं रहे, बल्कि वे सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन के केंद्र बन गए।

इस काल में विशेष रूप से भुवनेश्वर, कोणार्क, खजुराहो, राजस्थान तथा मोढेरा जैसे क्षेत्रों में मंदिर निर्माण की अत्यंत समृद्ध परंपरा विकसित हुई। यह शोध-पत्र इन क्षेत्रों के प्रमुख मंदिरों के स्थापत्य, शिल्पकला, प्रतीकात्मकता और सांस्कृतिक महत्व का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

भाग 1 : ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

1.1 राजनीतिक संरचना और संरक्षण

मध्यकालीन भारत में केंद्रीकृत सत्ता के स्थान पर क्षेत्रीय राजवंशों का उदय हुआ। चंदेल, पूर्वी गंग, सोलंकी (चालुक्य) और राजपूत शासकों ने मंदिर निर्माण को राजकीय संरक्षण दिया। मंदिरों का निर्माण न केवल धार्मिक श्रद्धा का प्रतीक था, बल्कि यह शासकों की शक्ति, वैभव और वैधता को स्थापित करने का माध्यम भी था।

1.2 धार्मिक और दार्शनिक आधार

इस काल में शैव, वैष्णव और शक्ति संप्रदायों का उत्कर्ष हुआ। मंदिर उपासना और मूर्तिपूजा ने व्यापक सामाजिक स्वीकृति प्राप्त की।

वास्तुशास्त्र और **शिल्पशास्त्र** जैसे ग्रंथों के आधार पर मंदिर निर्माण किया गया।

मंदिर को “देवालय” के साथ-साथ “विश्व का प्रतिरूप” (Cosmic Model) माना गया।

1.3 तकनीकी और कलात्मक प्रगति

पत्थर का व्यापक उपयोग (बलुआ पत्थर, ग्रेनाइट)

उन्नत नक्काशी तकनीक

जटिल संरचनात्मक योजना (गर्भगृह, मंडप, शिखर)

भार संतुलन और ऊँचाई में वृद्धि

1.4 प्रतीकात्मकता और दर्शन

मंदिर की रचना एक गहन दार्शनिक विचारधारा को व्यक्त करती है—

शिखर = मेरु पर्वत (ब्रह्मांड का केंद्र)

गर्भगृह = दिव्यता का केंद्र

मंडप = सांसारिक जीवन

मूर्तियाँ = धर्म, काम, अर्थ, मोक्ष का प्रतिनिधित्व

भाग 2 : प्रमुख मंदिरों का विस्तृत अध्ययन

2.1 ओडिशा शैली – भुवनेश्वर और कोणार्क

भुवनेश्वर

ओडिशा शैली (कलिंग शैली) भारतीय नागर मंदिर वास्तुकला की एक विशिष्ट उपशैली है, जिसका उत्कृष्ट विकास भुवनेश्वर और कोणार्क में हुआ। यह शैली अपनी भव्यता, ऊँचे शिखरों और सूक्ष्म मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध है। भुवनेश्वर को "मंदिरों का नगर" कहा जाता है। यहाँ नागर शैली का परिपक्व रूप विकसित हुआ।

स्थापत्य विशेषताएँ:

रेखाप्रसाद शिखर (ऊँचा, वक्राकार)

जगमोहन (सभा मंडप)

स्पष्ट क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर विभाजन

मुख्य उदाहरण:

लिंगराज मंदिर

राजरानी मंदिर

शिल्पकला:

देव-देवता, नृत्यांगनाएँ, अप्सराएँ और वनस्पति आकृतियाँ अत्यंत सजीव रूप में उकेरी गई हैं।

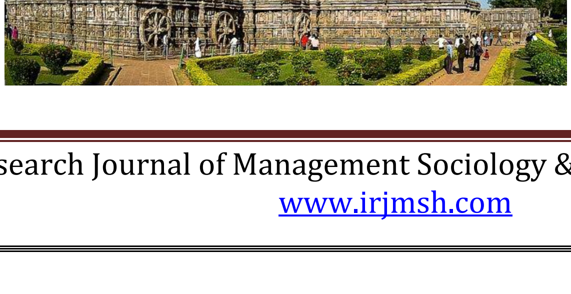

कोणार्क सूर्य मंदिर

13वीं शताब्दी में राजा नरसिंहदेव प्रथम द्वारा निर्मित, मंदिर को सूर्य देव के **रथ (Chariot)** के रूप में बनाया गया है, इसमें 24 विशाल पत्थर के पहिए और 7 घोड़े दर्शाए गए हैं, मूर्तियों में नृत्य, संगीत, युद्ध और दैनिक जीवन के दृश्य. यह यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल कोणार्क सूर्य मंदिर भारतीय स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण है।

विशेषताएँ:

रथ के आकार की योजना (12 चक्र, 7 घोड़े)
समय और गति का प्रतीकात्मक निरूपण
उच्च स्तरीय शिल्पांकन

वैज्ञानिक पहलू:

सूर्य की दिशा के अनुसार निर्माण
प्रकाश और छाया का नियोजन

2.2 खजुराहो – चंदेल शैली

खजुराहो के मंदिर चंदेल वंश द्वारा 9वीं से 12वीं शताब्दी के बीच निर्मित किए गए और ये उत्तर भारतीय नागर शैली की एक उत्कृष्ट उपशैली—**चंदेल शैली**—का प्रतिनिधित्व करते हैं। अपनी भव्यता, संतुलित योजना और अद्भुत मूर्तिकला के कारण ये विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। खजुराहो मंदिर समूह अपनी शिल्पकला के लिए विश्वप्रसिद्ध है।

संरचना:

ऊँची जगती
पंचायतन योजना
उरुशृंगयुक्त शिखर

मुख्य मंदिर:

कंदारिया महादेव मंदिर
लक्ष्मण मंदिर

शिल्पकला का विश्लेषण:

कामशिल्प (काम और अध्यात्म का संतुलन)
नृत्य, संगीत, युद्ध और दैनिक जीवन
अत्यंत लयात्मक और गतिशील आकृतियाँ

2.3 राजपुताना शैली

राजपुताना शैली भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग, विशेषकर **राजस्थान** में विकसित एक विशिष्ट स्थापत्य शैली है। इसका विकास मुख्यतः 8वीं से 18वीं शताब्दी के बीच विभिन्न राजपूत राजाओं के संरक्षण में हुआ। इस शैली में **किले, महल, हवेलियाँ और मंदिर** प्रमुख रूप से बनाए गए, जिनमें शौर्य, सौंदर्य और शिल्पकला का अद्भुत संगम दिखाई देता है। राजस्थान में मंदिर निर्माण स्थानीय परंपराओं और जलवायु के अनुरूप विकसित हुआ।

विशेषताएँ:

संगमरमर और बलुआ पत्थर का उपयोग
झरोखा, छतरी, गवाक्ष
अपेक्षाकृत सरल लेकिन प्रभावशाली शिल्प

मुख्य उदाहरण:दिलवाड़ा जैन मंदिर

विश्लेषण:

राजस्थानी मंदिरों में सौंदर्य के साथ-साथ संरचनात्मक मजबूती और सादगी का संतुलन दिखाई देता है।

2.4 गुजरात – मोढेरा सूर्य मंदिर

मोढेरा सूर्य मंदिर भारत के **गुजरात** राज्य में स्थित एक प्रसिद्ध सूर्य मंदिर है। यह मंदिर अपनी अद्भुत वास्तुकला, वैज्ञानिक योजना और सूक्ष्म नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है। इसका निर्माण 11वीं शताब्दी में सोलंकी वंश के राजा **भीमदेव प्रथम** ने करवाया था। खजुराहो मंदिर समूह अपनी शिल्पकला के लिए विश्वप्रसिद्ध है।

संरचना:

गर्भगृह (गुढमंडप)

सभामंडप

सूर्यकुंड

विशेषताएँ:

52 स्तंभ (समय चक्र का प्रतीक)

अत्यंत सूक्ष्म नक्काशी

सूर्य के साथ वास्तु संरेखण

महत्त्व:

यह मंदिर खगोल, धर्म और कला का समन्वय प्रस्तुत करता है।

भाग 3 : तुलनात्मक अध्ययन

विशेषता	**ओडिशा शैली**	**खजुराहो**	**राजपुताना**	**गुजरात**
योजना	जगमोहन,	मंडप ऊँची जगती	सरल	कुंड सहित
शिखर	वक्ररेखीय	उरुश्रृंगयुक्त	सरल	सममित
शिल्प	नृत्य, देवता	व्यापक, कामशिल्प	सीमित	सूक्ष्म
सामग्री	पत्थर	बलुआ पत्थर	संगमरमर	गुलाबी पत्थर
प्रतीक	सूर्य, नृत्य	जीवन-दर्शन	स्थानीय परंपरा	खगोल

भाग 4 : नवाचार और विरासत

4.1 स्थापत्य नवाचार

ऊँचे और जटिल शिखर

बहु-मंडप संरचना

जल तत्वों (कुंड) का समावेश

प्रकाश और दिशा का वैज्ञानिक उपयोग

4.2 कलात्मक नवाचार

कथात्मक शिल्प

मानव आकृतियों में गतिशीलता

सूक्ष्म अलंकरण

4.3 विरासत

नागर शैली का स्थायी प्रभाव

आधुनिक मंदिर वास्तुकला में निरंतरता

भारतीय सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक

भाग 5 : संरक्षण और चुनौतियाँ

5.1 वर्तमान स्थिति

प्राकृतिक क्षरण

प्रदूषण

पर्यटन दबाव

5.2 संरक्षण प्रयास

यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर संरक्षण

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के प्रयास

5.3 भविष्य की आवश्यकता

डिजिटल डॉक्यूमेंटेशन

संरचनात्मक पुनर्स्थापन

जन-जागरूकता

निष्कर्ष

मध्यकालीन इंडो-आर्यन (नागर) मंदिर वास्तुकला भारतीय कला और संस्कृति की सर्वोच्च उपलब्धियों में से एक है। भुवनेश्वर की स्थापत्य परिपक्वता, खजुराहो की जीवंत शिल्पकला और मोढेरा की वैज्ञानिक योजना यह सिद्ध करती है कि भारतीय मंदिर केवल धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि ज्ञान, कला और विज्ञान के अद्वितीय केंद्र थे।

हमे लगता है कि मध्यकालीन मंदिर वास्तुकला केवल अतीत की विरासत नहीं है, बल्कि आज भी भारतीय सांस्कृतिक पहचान और स्थापत्य परंपरा का जीवंत आधार है।

संदर्भ सूची: 1) भारतीय कलेचा इतिहास. लेखक : सुधा केतकर

2) इ. साधने.

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RSEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM